रामपन

RAMNESS

पार्ट–7

प्रस्तुतकर्ता :–

रामराज्य आहवाहन मिशन

Website : www.ramrajyaahwahan.com
E-mail : ram@ramrajyaahwahan.com

प्रमुख कार्यालय :
ए 1, बी 2, पुष्पा अपार्टमेन्ट–III, 44ए, राजेन्द्र नगर,
सैक्टर 5, साहिबाबाद जिला गाजियाबाद (यू0पी0)
फोन न0 0120–6516398, 09313055063

! ठहरो !

धरती पर, दोबारा से रामराज्य जैसी खुशियां लाने मे हमारा सहयोग करे।

रामराज्य आह्वाहन मिशन

वैबसाईट देखें :
www.ramrajyaahwahan.com

नोट : आप भी राम हो सकते हैं, आप कहीं न कहीं के राजा हैं, आप किसी न किसी बात के धनी हैं, आप अपने परिवार या अपने व्यापार के राजा ही तो हैं, भगवान ने हर एक को बनाया हैं। अपना राज्य तथा अपना धन पहचानें और अपने राज्य को रामराज्य जैसा बनाकर, इस दुनिया में रामराज्य लाने में हमारा सहयोग करें।

मिशन को जानने के लिए सम्पर्क करें।

A1 & B2, पुष्पा अपार्टमैंट–III, 44A, राजेन्द्र नगर,
सैक्टर 5, साहिबाबाद, जिला गाजियाबाद
फोन नं0 : 0120–6516399, 9313055063
E-mail : ram@ramrajyaahwahan.com

"मिशन सोचता है कि परिवार एक राज्य ही तो है, व्यापार एक राज्य ही तो है इसका मुखिया एक राजा ही तो है। हर राजा अपने राज्य को ऐसे क्यों नहीं चलाता जैसे राम जी अपना राज्य चलाया करते थे जब आप ऐसा चाहने लगेंगे, तो आप राम जी की तरह राज्य करना सीख भी जाऐंगे ही एवं जब आप राम जी की तरह राज्य करना सीख जाऐंगे तो रामराज्य ही करेंगे और क्या करेंगे। आपको भी आनन्द आ जाएगा आपके परिवार को भी आनन्द आ जाएगा और फिर धीरे धीरे रामराज्य ही होगा आप शुरु करें तथा अपने राज्य में रामराज्य बनाऐं।"

मां बाप एक भूतपूर्व मुखिया :– परिवार को हमेशा ध्यान रखना चाहिए कि मां बाप अर्थात दादी बाबा इस परिवार के भूतपूर्व मुखिया हैं अर्थात उनके साथ कम से कम ऐसा व्यवहार तो होना ही चाहिए जैसा एक भूतपूर्व मुखिया के साथ होता है उनके मान का ध्यान रखना उनको यथा सम्भव सुख सुविधाऐं प्रदान करवाना तथा उनको ऐसा एहसास बनवाए रखना कि आज भी उनको सब मानते हैं उनकी सब परवाह करते हैं।

दूसरी तरफ मां बाप का भी फर्ज है वह इस बात का ध्यान रखें कि वे भूतपूर्व हैं जरुरत से ज्यादा दखलंदाजी उनके व परिवार दोनों के लिए हानिकारक परेशानीदायक सिद्ध होगी। उनको यथोचित मान सम्मान सुख एवं खुशियों का आनन्द लेना चाहिए तथा परिवार के आनन्द लेने में सहयोग करना चाहिए इसी में उनका भी आनन्द है। उनमें सन्तोष समर्पण व सन्यास का भाव होना नितान्त आवश्यक है।

भूतपूर्व मुखिया सामान्यतः ऐसा ही होता है कि जो पुराने लोग होते हैं अर्थात जिनके समय में वह मुखिया था वे लोग तो हमेशा उन्हें मान सम्मान देते ही रहते हैं मगर जो नऐ लोग आते हैं जो कभी भी उस समय में नहीं रहे जब वे मुखिया थे, के प्रति मान सम्मान सिर्फ नाम मात्र का ही पैदा हो पाता है। यही है घर में आने वाली बहू के साथ उसमें भी इस ही वजह से शायद यह भाव पैदा नहीं हो पाता है यह एक सामान्य बात है इसके साथ adjust ही करना चाहिए तथा उम्मीदें कम ही रखनी चाहिए।

★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★

रामराज्य आहवाहन मिशन एक ऐसा मिशन है जो आपको एक सोच देता है एक विचार देता है जो आपके जीवन को एक सफल जीवन प्रशंसनीय जीवन सुखी जीवन बनाता है। वह सोच है कि आप अपने को राम समझें आप यह समझें कि आप ही तो राम हैं तथा राम जैसा व्यवहार करें, राम जैसे कर्मठ बनें, राम जैसे कृपालु बनें, राम जैसे दयालु बनें, राम जैसे परहितकारी बनें, राम जैसे स्वहितकारी बनें, राम जैसे व्यवहारिक बनें, राम जैसे सुन्दर एवं आकर्षक बनें जब ऐसा भी हो सकता है तो ऐसा ही क्यों न करें। जब आप ऐसा सोचने और समझने लगेंगे तो देखना ऐसा सब कुछ होने लगेगा तथा आपका जीवन आत्मगौरव, आत्मसन्तुष्टि, आत्मीयता, आत्मसुख, परिवारिक सुख, सामाजिक सुख से भर जाएगा। आऐं और आगे बढ़ें रामराज्य आपका इन्तजार कर रहा है। राम बनते हुए तथा राम बनाते हुए रामराज्य बनाऐं।

रामराज्य आहवाहन मिशन में हम राम को पढ़ते हैं एवं पढ़ाते हैं, हम राम को समझते हैं एवं समझाते है, हम राम का रामपन अपनाते हैं, एवं अपनाना सिखाते हैं। राम जी ने रामपन को अपनाते हुए रामराज्य बनाया था हम रामपन को अपनाते हुए अपने परिवार एवं व्यापार रुपी राज्य को रामराज्य जैसा खुशहाल सुखी एवं समृद्ध बनाते हैं तथा बनवाते हैं।

हम इस बात में विश्वास रखते है कि हम रामराज्य बनाने के प्रयास में अगर निरन्तर लगे रहेंगे तो एक न

एक दिन यह अवश्य बन ही जाएगा तथा इस प्रयास में तो श्री राम जी भी हमारी मदद करेंगे ही।

यही जीवन की सच्ची सफलता है जो हमारे इस लोक तथा परलोक दोनों का सुखी कर देगी। आओं इस आहवाहन में आप भी शामिल हो जाओ।

★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★

"सोई सुख सोई गति सोई भक्ति सोई निज चरन सनेहु।
सोई विवेक सोई रहनि प्रभु, हमहि कृपा कर देहु।।"

व्याख्या :– हे प्रभु श्री सच्चिदानंद श्री राम आप अपने निजी जनों को जो सुख (सच्चा सुख), जो भक्ति (सच्ची भक्ति दिखावे की नहीं) जो गति (सदगति), जैसा उनका आपके चरणों में प्रेम (अर्थात सच्चा प्रेम दिखावे का नहीं) होता है तथा जैसा उनमें विवेक होता है (अर्थात् सद्विवेक) एवं जैसा उनका रहन सहन होता है (अर्थात सच्चा रहन सहन दिखावे का नहीं) प्रभु हम पर भी ऐसी ही कृपा कर दीजिए।

हे प्रभु आप तो इतने दयालु तथा इतने कृपालु है कि हमें तो आपका सच्चा निजी जन बनना भी नहीं आता है प्रभु आप हम पर अपनी दया तथा अपनी कृपा कर दीजिए तथा अपना सच्चा निजीजन बना लीजिए ताकि हमारा भी जीवन सफल हो जाए तथा आपकी दया का आपकी कृपा का एवं आपका नाम रोशन हो। हे राम हे प्रभु सच्चिदानंद हम पर दया कीजिए।

श्रीराम जी का ऐसा सुन्दर स्वभाव है कि वे अपने स्वयं से भी उतना स्नेह नहीं करते हैं जितना कि अपने भक्तों से करते हैं एक बार को कोई उनका द्रोह भी कर दे तो वे उसे माफ कर देते हैं मगर अगर कोई उनके भक्तों को छले उन्हें नुकसान पहुंचाऐ उनके काम में विघ्न डाले उनकी सेवा में विघ्न डाले तो उनका क्रोध ा प्रचंड होने लग जाता है क्योंकि रामभक्त तो सिर्फ नेक काम परहित ही करते हैं कोई राम जी के इस काम में बाधा डाले तो उनका गुस्सा तो आएगा ही। वे तो अपनी शरणागत वत्सलता के लिए प्रसिद्ध हैं।

बस अगर आप भी राम जी का यह स्वभाव अपना ले, आप भी राम जी के प्रिय हो जाऐं अर्थात अपने भक्तों, सेवकों, कर्मचारियों व अपने आश्रितों के मन से आभारी हो जाऐं, उनका भला करने में ही अपना भला समझें, उनको प्यार, प्रेम, स्नेह, सुन्दर, शिक्षाऐं, मदद दें। वे बेचारे कहां जाऐंगे तुम पर ही तो निर्भर हैं अगर आप ऐसा कर पाऐं तो राम जी की सच्ची सेवा हो जाऐगी। अब अगर वे तुम्हारे आश्रित हैं तो राम ही के तो आश्रित हैं आप राम के जन्म को सफल कर दें मेरी हाथ जोड़कर विनती है मेरी इस विनती का मान रख लें तथा श्री राम के जन्म को सफल कर दें यह आप ही है जिसे यह सब करना है।

★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★

जब दो लोग लड़ते है तो निम्न परिस्थियां होती हैं।

1. एक लड़ता है तो दूसरा उससे ज्यादा लड़ने लग जाता है तथा होश खो देता है।
2. एक लड़ता है तो दूसरा उससे ज्यादा या बराबर का लड़ने लग जाता है।
3. एक लड़ता है तो दूसरा नहीं लड़ता है मगर चुप रहता है तथा मन मन में लड़ता रहता है।
4. एक लड़ता है तो दूसरा नहीं लड़ता मगर चुप रहता है तथा मन को भी शान्त रखता है।
5. एक लड़ता है तो दूसरा हंसने लगता है तथा हंसता रहता है तथा टालता रहता है मगर मन में बदला लेने की ठान लेता है।
6. एक लड़ता है तो दूसरा हंस हंसकर टालता रहता है तथा मन में भी कोई बैर नहीं पालता तथा उसे भी हंसकर उसका भी मन साफ कर देता है।

अब जो उपर लिखित बाते हैं इन्सान के स्वाभाविक गुणों (Say Hardware and Software) पर निर्भर करती हैं जो जन्मजात (Say Hardware) संस्कारवश (Say Software) होते हैं अब जिस इन्सान में जो गुण होते हैं वो वही कर पाता है। हां अच्छे गुणों को या बुरे गुणों को सीखने की कोशिश कर सकता है मगर जन्मजात (Hardware) गुण भी महत्वपूर्ण हैं उस ही हिसाब से गुणों का सीख पाना आसान एवं कठिन होता है। बस ये जो गुण है निम्नलिखित है।

1. क्लेश प्रिय होना
2. उदासीन होना सिर्फ अपने में मस्त रहना दूसरों से ज्यादा मतलब ही न रखना

3. प्रेममय होना या प्रेममय रहना
4. मजाकिया होना
5. परोपकारी होना।

जो राम भक्त है उसका फर्ज है कि वह किसी से कभी द्वेष (ईर्ष्या Hate) न करे वह तो उससे भी द्वेष करने का अधिकारी नहीं होता जो उसे जानबूझकर दुख पहुंचाता है क्योंकि अगर कोई किसी को दुख पहुंचाता है तो वह होता है अज्ञानतावश। उसे ज्ञान नहीं है कि दुख पहुंचाना बुरी बात है या वह समझ नहीं पा रहा है कि वह किसी को दुख पहुंचा रहा है। अगर कोई अज्ञानी है तो उससे द्वेष कैसा उस पर तो दया की जानी चाहिए कि श्री राम उस पर भी कृपा करें कि उसे भी इस बात का ज्ञान हो जाए ताकि वह भी पाप से बच सके जो इससे अज्ञानतावश हो रहा है।

ऐसा होना होता है रामभक्त को। यही रामपन है तभी वह 'श्री राम' का अपना हो सकता है तभी वह श्री राम का अपना हो सकेगा।

★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★

'रामराज्य आहवाहन मिशन' भी तो एक ऐसा ही राम का पेड़ है जैसे–रात की रानी का पेड़ एक प्यारा सा, सादा सा, महकता हुआ, पवित्र सा, लोगों को आकर्षित करता है, मन को शान्त करता है, मन करता है आज तो हम यही बैठ जाऐं इसकी महक का इसकी शान्ति का आनन्द ले लें।

ऐसा है यह मिशन वाह–बाह मेरे प्रभु राम आपने यह इतना सुन्दर काम कैसे ईजाद कर दिया मैं तो धन्य हो गया।

★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★

आज के युग में प्रत्येक व्यक्ति अर्जुन की तरह अनेक समस्याओं व प्रश्नों से घिरा हुआ है वह चाहते हुए भी अपनी शंकाओं का समाधान नहीं कर पा रहा है। राम नाम एक ऐसा मंत्र है जिससे हमें ज्ञान रुपी मोती प्राप्त होंगे और जीवन की उलझी गुत्थियां सुलझेंगी। राम नाम से ही आत्मा के ऊपर जमी विराट विकारों की एक एक परत हटकर दिव्य प्रकाश के दर्शन होंगे।

★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★

चार प्रकार की बातें होती है।

1. पुरुष का पुरुष से बातें करना
2. स्त्री का स्त्री से बातें करना
3. पुरुष का स्त्री से बातें करना
4. स्त्री का पुरुष से बातें करना

हर प्रकार की बातों का साईड इफेक्ट है पहली एवं दूसरी प्रकार की बातें सामाजिक दृष्टि से सुरक्षित है तथा तीसरी तथा चौथे प्रकार की बातें सामाजिक दृष्टि से असुरक्षित है। कैसे अब आप देखें, इन बातों का साइड इफेक्ट आप अंदाजा नहीं कर सकते हैं कैसा होगा आप एवं आपका मन अच्छा हो सकता है मगर दूसरा या दूसरे इसको किसी भी प्रकार ले सकते हैं

और अगर दूसरों ने इसे गलत तरीके से ले लिया तो आपका अपने को बचा पाना बडा ही कठिन होगा।

जब मैनें यह परेशानी अपने भगवान के साथ रुबरु की कि प्रभु आप भी तो सब से बाते करते होंगे आप अपने को कैसे भगवानी रख पाते थे, कैसे गलत इल्जामों से बचा पाते थे। तो प्रभु का एक ही जवाब था परदा बस परायी स्त्री से तो परदा कर लो न आंखों को बातें करने दो न खुद को वरना आप दुर्घटनाओं के शिकार निश्चित रुप से हो सकते हो यही माया मोह है। परायी स्त्री से अगर आप परदे का भाव रखते हो तो सुरक्षा निश्चित है परदे से आप अपनी आंखों को भी बात करने से रोक पाते हो अपनी शारीरिक भाषा पर अंकुश लगा सकते हो एवं दूसरे लोगों के गलत समझ लेने से बच सकते हो तथा समाज में सम्मानपूर्वक जी पाओगे। स्त्री के नाम पर सिर्फ अपनी स्त्री अपनी अर्द्धांगिनी, बाकी सब पराया, यही है सच्चा एवं सुरक्षित अन्दाज। परायी स्त्री से एकान्त में बात आदि करने से बचें।

पत्नी पति की अर्द्धागिनी है तो सुरक्षित है कि स्त्रियों का तो सम्पर्क अपनी पत्नी से करायें तथा पुरुषों का सम्पर्क खुद से रखें इससे सुरक्षित रहेगा। इसके लिए आप असुरक्षित मार्गों को, सम्पर्कों को हतोत्साहित करें तथा उचित व्यवहारों अर्थात उचित सम्पर्कों को ही प्रोत्साहित करें तथा अनुचित व्यवहारों व सम्पर्कों को प्रोत्साहित न करने की आदत डालें। आप काफी हद तक अपना स्थान इस समाज में सम्मानीय प्रशंसनीय बना पाऐंगे।

आज के युग में जहां स्त्री पुरुष सभी साथ में पढ़ते है, साथ में कार्यरत है कैसे ऐसा व्यवहार निभाया जाए इसके लिए एक ही तरीका है कि व्यवहार अपने पदों की, अपने सम्बन्धों (Association) की मर्यादाओं में, एक के साथ दूसरे को न जोड़ें। सम्बन्धों व पदों की आड़ में अपने सहयोगी कार्यरत के स्त्री तत्व के साथ अपना संबन्ध न मानें, स्त्री तत्व को नजरंदाज करते हुए सिर्फ पदों तथा Association तक ही सीमित रहें तथा मर्यादाओं का पालन करें निश्चित रुप से शायद आपको या आपके सहयोगी कार्यरत को सामाजिक अपमान का सामना कभी नहीं करना पड़ेगा।

स्त्री तत्व, भगवान ने हर किसी को एक स्त्री की जिम्मेदारी, उस पर अधिकार दिया है यह अधिकृत सम्बन्ध है अगर अधिकृत सम्बन्धों व सिर्फ अधिकृत व्यवहार ही होंगे तो सुरक्षित एवं आत्मगर्व, आत्म सन्तुष्टि की बात है अगर अनाधिकृत रास्तों पर चलोगे तो समस्या तो होगी ही, हो ही सकती है, अगर किसी को कोई परेशानी नहीं हुयी तो यह मौके की बात है उसे देखकर यह न सोचें कि रास्ता सही हो गया।

अब ठीक यही है कि परायी स्त्री से बचना, परदा रखना यही अधिकृत है तो अनाधिकृत व्यवहारों तथा रास्तों से बचें तभी सुरक्षित है, अगर समय की या वातावरण की अगर जरुरत भी है तो रिश्तों सम्बन्धों पदों की मर्यादा में रहें, एकान्त से बचें अगर जरुरी है तो अपनी अर्द्धांगिनी के द्वारा व्यवहार करें, और अगर

और भी जरुरी है तो उसके स्त्री तत्व के आकर्षण, उसके प्रभाव को प्रभाव हीन रखें। आप राम में विश्वास रखें राम आपका ध्यान रखेंगे।

जय श्री राम।

★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★

एक बार मेरे से एक स्त्री भक्त ने पूछा कि स्त्री एवं पुरुष लड़का एवं लड़की दोनों ही सही एवं अच्छे होते है मगर फिर भी शर्मनाक दुखदायी स्थिति पैदा हो जाती है इसका क्या कारण है। मैनें कहा कारण है स्वभाव का फर्क। भगवान के दिये गये स्वभाव का फर्क है जो भगवान ने औरत को अलग व पुरुष को अलग दिया है। फर्क जानें स्त्री का स्वभाव तो caring होता है जब कि पुरुष का स्वभाव loving होता है प्यार अर्थात पुरुष प्यार देने में तथा प्यार लेने में विश्वास करता है जबकि स्त्री (caring) देखभाल में विश्वास रखती है बच्चे का, बड़े का, भाई का, मां बापू जी का, सभी का। यह देखभाल (caring) स्वभाव अक्सर पुरुष के द्वारा गलत समझ लिया जाता है। इसको प्यार प्रेम समझ लिया जाता है। पुरुष स्त्री की देखभाल को अपने प्रति प्रेम समझ लेता है तथा स्त्री पुरुष के प्यार को देखभाल समझती है तथा गलत भ्रम में गलत बहाव होता चला जाता है तथा समाज में शर्मनाक व दुर्घटनात्मक स्थितियां पैदा हो जाती हैं। जबकि स्त्री तो प्रेम सिर्फ एक से ही करती है। पुरुष भी प्रेम के लिए दुनिया में अगर केवल एक ही स्त्री को माने जो उसे भगवान ने दी है बाकी

सब को परायी स्त्री तो कभी भी ऐसी स्थितियों का सामना नहीं करना पड़ेगा एवं जीवन आनन्दमय खुशियों से भरा एवं देखभाल से भरा पूरा रहेगा। देखभाल एवं प्यार में बाल भर का फर्क है, उसे ठीक से समझ लें, समझने पर समझ में आ ही जाएगा यही सत्य है, यही सत्य है।

जय श्री राम।

★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★

आज का समय ऐसा हो गया है कि हमें वह अच्छा नहीं लगता जो सही है और वह सही लगता है जो गलत है। हम अपने विचार किसी को समझा ही नहीं पाते हैं और यही हमारे साथ होता है जो हम दूसरे के विचार या सोच को समझ नहीं पाते। सच तो यही है कि बस इस बात को चाहने के बावजूद भी हम संभाल ही नहीं पा रहे हैं कर नहीं पा रहे हैं या शायद इस बात को संभालने की या इसे सही से करने की इच्छा ही अपने अन्दर जागृत नहीं कर पा रहे हैं। श्री राम इसी गुत्थी का सम्पूर्ण हल हैं। वे न बोली जाने वाली बात को भी आसानी से हल कर देते हैं। इसलिए अपने मन को एक बार श्री राम के मन से मिलाकर देखो फिर देखना जो तुम स्वयं को बनाना चाहते हो वही बन जाओगे साथ में और भी इतना सुन्दर एवं अच्छा जो आज आपकी कल्पना से भी बाहर है।

जय श्री राम।

★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★

मैं कुछ नहीं जानता मुझे कुछ नहीं पता बस मै चाहता हूँ कि हम सब चुपचाप ऐसे चलें।

←— Head ←— Manager ←— Children

चुपचाप हैड जिधर ले जा रहा है इधर मोड़ रहा है तो इधर, उधर मोड़ रहा है तो उधर। हैड का विरोध नहीं वरना गाड़ी पटरी से उतर जाएगी या पलट जाएगी।

मैं (हैड) अगर किसी की बुराई कर रहा हूँ कमी निकाल रहा हूँ तो विरोध न करें। अरे भाई उसकी जरुरत होगी और मैं गलत कर रहा हूँ तो मुझे ठोकर लग जाएगी खुद अकल आ जाएगी खुद अकल आने दें। यही जीवन के अनुभव हैं आप मेरी शिकायतों को मेरी तारीफों को ऐसे ही अपना के देखें जैसे मैं कह रहा हूं जैसे मैं चाहता हूँ वैसे ही कर के तो देखें अरे मेरी पत्नी की, मेरे मैनेजर की, मेरे बच्चों की जिम्मेदारी मुझ पर है। मैं शिकायत भी करुगां, डाटूंगा भी, नीचा भी दिखाऊंगा, ध्यान भी रखूंगा। तुम मेरा विरोध कैसे कर सकते हो, तुम मेरे से उसके लिए लड़ कैसे सकते हो, तुम सिर्फ अपनी नाखुशी जाहिर कर सकते हो वह भी सलीके से तथा अनुशासन के साथ सर (स्वामी, पापा) अगर आप हमारी ऐसे बेइज्जती नहीं करते, सर हमें यह चीज भी चाहिए, सर हमे यह तारीफ चाहिए थी, सर हमें यह खाना था, सर हमें वहां घूमने जाना था। सर (Boss is always right) खुश रहेगा तभी सब खुश रहेंगे यह मत सोचो कि तुम सब खुश रहोगे तो सब खुश रहेगा यह काम सर का सोचने का है तुम्हारा

नहीं तुम्हारा काम तो है सर की हां में हां मिलाने का, सर का ध्यान रखने का, सर को धीरे धीरे से मौका देखकर अपनी इच्छा अपनी जरुरत अपना मन बताने का मौका देखकर, मगर सर की हां में हां जरुर। जब तुम सर को खुश रखोगे तो वह खुद ही ध्यान रखेगा तुम्हारा वरना क्यों रखेगा। तुम्हें ध्यान रख ा है कि वह किस में खुश होता है उसे किसमें खुशी मिलती है वह क्या चाह रहा है वह क्या कर रहा है अपनी जबरदस्ती नहीं।

मैं सर अपने मैनेजर से बहुत परेशान हूं हमेशा यही देखता रहता है सिर्फ इस ही को ढूंढता रहता है कि मैने उसके लिया क्या नहीं किया, मैं उसके लिए क्या नहीं करता हूँ। वह यह देखता ही नहीं है कि मैं उसके लिए क्या-क्या करता हूँ मैंने उसके लिए क्या-क्या किया था अर्थात – ve attitude हमेशा हर जगह ही ढूंढना मैं + ve बताऊँ तो किसी और – ve को ढूंढ निकालना वहां का + ve बताऊँ तो कोई और – ve ढूंढ निकालना मगर बातें सिर्फ – ve की ही करनी।

दूसरी तरफ दूसरों के लिए हमेशा + ve देखना कि मैनें दूसरों के लिए क्या क्या किया मैं दूसरों के लिए क्या क्या करता हूं कभी नहीं देखना मैं दूसरों के लिए क्या-क्या नहीं करता हूँ मैंने दूसरों के लिये क्या नहीं किया काश यह सब मैनेजर पत्नी की समझ में आ जाता।

ऐसा – ve attitude से मेरा भी जीवन क्लेशमय कर दिया है तथा अपना भी क्लेशमय कर लिया है क्योंकि यह तो हमेशा ही ऐसा ही रहेगा क्योंकि कुछ न कुछ तो अवश्य जरुर रहेगा जो मैं नहीं कर पाऊँगा अर्थात मेरे से जीवन भर शिकायत रहेगी। दूसरी तरफ अब दूसरों के लिए भी कुछ न कुछ तो हमेशा ही करुंगा सब ऐसा तो शायद कभी नहीं हो पायेगा कि मैं दूसरों के लिए कुछ भी न करुं अर्थात मेरे जीवन में तो हमेशा ही क्लेश रहेगा। मैनेजर मेरा तथा अपना जीवन क्लेश रहित, सुखी, शान्त एवं खुशहाल क्यों नहीं करना चाहता जबकि यह भी बड़ा आसान था अगर यह देखता कि मैंने उसके लिए या उसके परिवार के लिए क्या-क्या किया है तथा क्या-क्या करता हूं बशर्ते इसके कि मैने क्या-क्या नहीं किया क्या-क्या नहीं करता हूं तथा इसमें मेरी मदद करता कि मैं उसके लिए एवं उसके परिवार के लिए और वो सब भी जो अभी मैंने नहीं किया या नहीं कर पाता हूँ मैं उसको भी कर सकूं।

दूसरी तरफ दूसरों के साथ यह देखे कि हम इसका यह भी नहीं कर पाये हमने इस... लिए यह भी नहीं किया तथा मेरी मदद करते कि मैं दूसरों के लिए और सब भी कर पाता। बिना इसके तो रामराज्य सम्भव ही नहीं है काश मैं अपने आश्रितों को यह सब समझा पाता, उन्हें ऐसा करना सिखा पाता। जब भी मैं यह सब समझा पाया या सिखा पाया तो तभी रामराज्य हो जाऐगा। काश ये अपनी चिन्ताऐं सिर्फ मुझ पर छोड़

देते मैं जैसे कहता करते मुझ पर पूर्ण भरोसा रखते तो आगे जाके क्या होता क्या मैं इनकी सबसे प्रशंसा नहीं करवाता, इनका मान नहीं बढ़वाता।

★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★

लोग 2 प्रकार के होते हैं :–

प्रथम :– वे जो सबका करते हैं तथा सबसे करवाते भी हैं अब ये ज्यादातर ये ही देखते रहते हैं इसने हमारा ये नहीं किया ये हमारे लिए क्या-क्या नहीं करता। काश ये लोग बस यही देखते कि हमने तो इसका ये भी किया हमने तो इसका भी किया एवं देखकर खुश होते कभी परवाह नहीं करते अगर किसी ने नहीं किया तो।

द्वितीय :– वे न तो किसी का करते हैं न किसी से करवाते हैं वे ज्यादातर यही कहते रहते हैं हम तो किसी से कुछ करवाते ही नहीं हैं इस पर गर्व महसूस करते रहते हैं। ये लोग बस उतना ही करते हैं या करवाते हैं जितना करना या करवाना उनकी मजबूरी होता है चूंकि ये सब कुछ मजबूरी वश होता है तो उसका एहसान भी नहीं मानते, न अपना एहसान, न दूसरों के किये का एहसान। काश ये लोग इस बात की तड़ी न मारा करते कि हम तो किसी से कुछ करवाते नहीं हैं इनमें कुछ लोग इस बात से दुखी रहते हैं कि हम किसी का क्यों नहीं करते कुछ यूँ परेशान रहते हैं कि हम किसी से क्यों नहीं करवाते हैं तथा हर समय दूसरों को प्रताड़ित नहीं किया करते।

★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★

'रामराज्य आहवाहन मिशन' के विश्व विख्यात सफल होने की संभावना के निम्न आधार हैं:–

1. मेरा बचपन से ही ध्रुव व प्रहलाद जैसा भक्त होने का मन रहा है।
2. ब्रह्मा जी ने हमारे परिवार को संसार के दस सबसे सुखी परिवारों में से एक परिवार होने का आर्शीवाद दिया है।
3. स्वप्न में महाकाली जी ने भी कहा था कि तुम्हारी आवाज कैलाश तक जाती है।
4. देवी मां ने कहा था कि काम तो इतना होगा कि बस खाना ही चैन से खाओगे।
5. गुरुजी ने रक्षा कवच देते समय वरदान दिया था कि श्री हनुमान जी मेरे दिमाग का संचालन करेगे।
6. दुनिया में सबसे बड़ा सुख तो संतोष का सुख ही है जो सिर्फ राम मय होने से ही आता है।
7. लखनऊ वाले स्वप्न का मतलब गुरुजी ने यही बताया था कि राजीव तु एक दिन भगवान के समान ही हो जाएगा।
8. रामायण में कहा गया है कि राम-राम रटकर बाल्मीकी जी ब्रह्म के समान हो गये थे।
9. गुरुजी कहते थे चिन्ता मत कर बेटा एक दिन दुनिया तुझे इतना प्यार करेगी कि तू प्यारा सा हो जाएगा।

10. मैनें भगवान राम से मांगा था मुझे अपना निजी जन बना लो।
11. मैनें भगवान से मांगा था प्रभु मुझे भी काकभुसुण्डि जैसा कथाकार बना दो।
12. मैनें प्रभु श्री राम से मांगा है कि मुझे भरत जैसा अपना सेवक बना लो जिसकी प्रभु राम खुद भी तारीफ करते हैं।
13. मुझे अमित ने बताया था कि मै भगवान का ऋण लेकर आया हूँ मुझे वह चुकाना है।
14. गुरु जी कहते है 2 थे बिन्दु, बिन्दु पे बिन्दु ऐसा बरस पड़े मेघनाद रावण का बेटा फिर से जन्म धरे। कहते हैं फिर से रामराज्य आयेगा जो 100 वर्ष तक रहेगा क्योंकि मेघनाद की अकाल मृत्यु हो गयी थी वह अपना बाकी का जीवन रामराज्य बनाने रामराज्य का सुख भोगने में गुजारेगा। मेरे पिता जी भी शिव भक्त थे, मेघनाद के पिता भी शिव भक्त थे।
15. नस्त्रोदम की भविष्यवाणी में लिखा है कि वह सनातन धर्मी होगा अधेड़ उम्र का होगा हर किसी को अभूतपूर्व राज्य प्रदान करेगा। हमारा मिशन कह ही यह रहा है कि हर एक राजा है।
16. नस्त्रोदम ने कहा है कि वह भक्ति का एक नया ही रुप, नया ही रास्ता बताऐगा और दुनिया के बड़े-बड़े धर्मात्मा अचम्भित हो जाऐंगे हमारे मिशन का मार्ग भी ऐसा ही है एक दम नये प्रकार का ही।

17. नस्त्रोदम ने कहा है कि उसके सामने लोग धीर-धीरे नम्र पड़ने लगेंगे हमारे मिशन में भी यही हो रहा है धीमे-धीमे हर कोई नम्र पड़ जाता है।

18. स्वामी रामदेव जी ने सिद्ध कर दिया है आज के योग मार्ग की ख्याति दिखा दी है भक्ति मार्ग तो योग मार्ग से आगे का मार्ग बताया गया है अर्थात ख्याति और भी ज्यादा।

19. भगवान ने कहा है कि मैं सिर्फ अपने सच्चे भक्त के कहने पर कुछ भी करता हूं अर्थात भक्त के निहोरे पर ही, सिर्फ तभी अवतार लेता हूँ अर्थात कल्कि का अवतार होगा जिसे लोग कहते हैं।

20. प्रभु ने मुझे प्रभु सच्चिदानंद की प्रार्थना दिखायी। "सोई सुख सोई गति सोई भक्ति सोई निज चरन सनेहु। सोई विवेक सोई रहनि प्रभु, हमहि कृपा कर देहु।।"

21. सन्त समाज का उद्वार कलयुग की दृष्टि से वह तो मिशन ही कल्पना कर रहा है अर्थात भगवान की खुशी क्योंकि भगवान के भक्तों अर्थात सन्तों को मान दिलाऐगा।

22. मां सरस्वती जी की मुझ पर विशेष अनुकम्पा, उनका मेरे को ढांढस बंधा देना कि तुझे सब ज्ञान हम देंगे तथा दिखा भी रहे हैं कैसे-कैसे वे मेरे दिमाग को सुलझा रहे हैं। पढ़ा रहे हैं।

23. शादी के बाद इतने सारे भगवान के सपनों का आते रहना तथा सपनों द्वारा मार्ग दर्शन किये जाते रहना।

24. श्री गुरु स्वामी कृष्णाचार्य जी ने आर्शीवाद दिया है कि 5 साल में जो सब कुछ सोच रहे हो सब हो जाएगा तथा मैं तो यही सब सोच रहा हूँ।

25. एक बार श्री हनुमान जी से शिकायत की गयी कि मैं तो किसी को राम बना रहा था मुझे ही क्यों मुसीबत में डाल दिया उन्होने कहा हम तो तुम्हें ही राम बनाऐंगे हम सभी ज्ञान, सभी रास्ते देगें।

26. भगवान की प्रतिज्ञा है कि "तू मेरे रास्ते पर चल कर तो देख, सारे रास्ते न खोल दूँ तो कहना, तू मेरे लिए आंसू बहा के तो देख, हर एक को तेरा अपना न बना दूं तो कहना, तू लोगों से मेरा गुणगान करके तो देख मैं तुझे कीमती न बना दूं तो कहना आदि एवं ऐसा हो भी रहा है।

★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★

लोग 2 प्रकार के होते है :–

प्रथम :– जो इस प्रकार सोचते हैं कि दूसरों की तरफ कैसे ऐसे कि देखो इनको तो क्या-क्या मिल रहा है तथा ये तो यह भी नहीं करते हैं यह भी नहीं करते हैं अर्थात दूसरों की उपलब्धियों को देखकर परेशान होना एवं उनके आराम को देखकर परेशान होना तथा यह नहीं देखना कि दूसरे क्या-क्या करते भी हैं, उनको तो क्या-क्या और भी मिलना चाहिए जो नहीं मिल पा रहा है।

द्वितीय :– अपने लिए बस यही देखना कि हमें क्या क्या नहीं मिल रहा है हम तो क्या-क्या करते हैं बस

यही देखकर परेशान रहना कि हम तो यह भी करते हैं हमें तो यह भी नहीं मिलता हम तो यह भी करते हैं हमें यह भी नहीं मिलता तथा यह कभी नहीं देखते कि हम क्या-क्या नहीं कर रहे हैं जो हमें करना चाहिए था हमें क्या-क्या मिल रहा है अगर वो भी न मिलता तो क्या होता, कुछ को तो वो भी नहीं मिल रहा है। क्या-क्या हमें ऐसा भी मिल गया है जिसके लिए हमने कर्म भी उचित प्रकार से नहीं किया था।

बस यही है कारण प्रेम का एवं नफरत का। एक तो प्रेम फैलाता है दूसरा फैलाता है नफरत और कहां तक, यहां तक कि भगवान तक से नफरत करा देता है। यही है सोच एक एवं दूसरी एक से तो हम धीमे धीमे प्रशंसा के पात्र बनते चले जाते हैं तथा दूसरी से हम दूसरों को यहां तक कि भगवान को भी अप्रशंसा अर्थात निन्दा का पात्र बना देते हैं। आगे जाकर यह भी पता नहीं चल पाता कि यह सोच कहां से शुरु हुई थी बस सिर्फ माहौल गन्दा एवं निन्दनीय हो जाता है। काश कि लोग यह फर्क समझ पाते तथा +ve ही सोचा करते तो सब तरफ खुद के लिए भी औरों के लिए भी यहां तक कि भगवान के लिए भी प्रशंसा का सुन्दर सा माहौल हो जाता यही तो स्वर्ग है यही तो रामराज्य कहलाता है। काश लोग यह समझ पाएं एवं कर पाएं जितना सम्भव हो कम से कम उतना तो कर ही लें। वैसे तो दोनों ने ही होना होता है तभी दुनिया बनती है

काश यह सिर्फ इस फर्क को पहचानने के काम ही आता अपना प्रभाव ना फैलाता कितना आनन्द आ जाता।

★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★

श्री राम, सच, श्री सच्चिदानंद भगवान सिर्फ अनुभव के द्वारा ही जाने जा पाते हैं अर्थात ये कितने अच्छे हैं, कितने सुन्दर मन के हैं, कितने प्यारे मन के हैं, कितने दयालु हैं, तथा कितने कृपालू हैं यह सब वही जान पाता है जिसने इन्हें अनुभव किया है जिसने इनका संग किया है जब वह संग करता है तो उसको ये अनुभव हो पाते हैं जिसने अनुभव ही नहीं किया वह क्या जाने इनका आनन्द इनका सुख, इनका प्यार, इनकी अमृत वर्षा।

श्री राम तो हमेशा अपने सेवकों को बड़ाई दिलाते हैं तथा जब वे बड़ाई वाले काम करते हैं तो भगवान खुश होते हैं। भगवान अपने सेवकों से ऐसे-ऐसे करवाते हैं कि उनको बड़ाई मिले। इस भाव से ही तो रामराज्य आ जाता है अब जिस आफिस के सेवकों की बड़ाई होती है तो उस ऑफिस के मालिक के तो क्या कहने उसे तो लोग पूजेंगे उसको तो सब मान देंगे ही उसको तो सब खुश रखेगे ही। रामराज्य का सुख है ही अनन्त असीम एवं अपार।

जब कहीं पर सब मजे से रह रहे होते हैं तथा मौज कर रहे होते हैं मस्ती कर रहे होते हैं कोई किसी को कुछ नहीं कह रहा होता है तो लोग कहते हैं कि भईया यहां

तो रामराज्य है रामराज्य आ गया है मैं इस सोच में पड़ जाता हूं क्या यह तारीफ कर रहा है या व्यंग्य कस रहा है अर्थात क्या रामराज्य होना एक अच्छी बात है या अनावश्यक बात। ऐसा तो सभी कहते हैं कि साहब रामराज्य जैसा सुन्दर राज्य तो कभी हुआ ही नहीं है वहां सभी लोग खुश थे आनन्दित थे सुखी थे चाहें कहीं भी कैसे ही तुम्हारा सामान पड़ा है, तुम पड़े हो कोई खतरा ही नहीं था सुरक्षापूर्ण महौल अत्याधुनिक सुख एवं आनन्द। अब जब ऐसा था तो यकीनन यह तो अच्छी स्थिति ही थी अर्थात रामराज्य जैसी राज्य चलाने की पद्धति तो प्रशंसनीय ही थी इसको हम अप्रशंसनीय कैसे कह सकते हैं। यह जो व्यंग्य होता है बस सिर्फ ऐसा ही व्यंग्य होता है जैसे कि सेठ अमीर अगर आनन्द ले रहा होता है अच्छी अच्छी चीजें खा पी रहा होता है अच्छा-अच्छा पहन ओढ़ रहा होता है तो सब यह कहकर अपनी झेंप मिटाते हैं भईया वह तो सेठ है वह तो भगवान है उसके तो मजे होंगे हीं होगे। मतलब यह हुआ कि रामराज्य सभी चाहते हैं मगर अपने यहां न पाकर कहीं और पाते हैं तो बस झेप मिटाते हैं तथा मन मन में सोचते हैं काश ऐसा हमारे यहां भी होता।

अरे भक्तों भगवान दयालु हैं, कृपालु हैं, सामर्थ्यवान हैं, चिन्ता न करों तुम भगवान से प्रार्थना करो तथा अपने यहां रामराज्य बनाने का प्रयास करो आपके यहां भी निश्चित रुप से ही एक दिन अवश्य रामराज्य होगा। अगर आप इस उपलब्धि को अपने जीवन काल में कभी

भी पा सको बना सको तो आपका जीवन धन्य हो गया, आपका परिवार आपका राज्य धन्य हो गया। हे मेरे राम! जैसे आपने अपने समय में सभी लोगों, अपनी सारी प्रजा का जीवन खुशियों से भर दिया था मेरे प्रभु आज फिर सबका जीवन खुशियों से भर दो मैं जानता हूं आप सामर्थ्यवान हो आप सब कुछ कर सकते हैं।

★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★

घर : घर में कई लोग रहते हैं अर्थात घर में कुछ सामान तो हर किसी का अपना सामान होता है तथा कुछ common होता है। अब देखा जाय तो घर में आपस में झगडा होता ही क्या है बस यही कि तुने मेरा सामान क्यों छेड़ा इसमे ये क्यों खराब किया, वो क्यों खराब किया, ये मेरी क्यों नहीं मानता, ये मुझ पर हुक्म क्यों चलाता है, मैं ही क्यों करुं ये क्यों नहीं करता, गलती कोई मेरी ही थोड़े ही है इसकी भी तो है अब यदि सब यह समझ लें और इसकी नौबत ही न आए तो बस झगड़े खत्म। सिर्फ प्रेम प्यार के अलावा वहां होगा ही क्या शायद कुछ और नहीं वहां रामराज्य जैसा प्यार वातावरण ही तो हो जाएगा। अतः अगर सब कुछ सही से परिभाषित हो सभी अर्थात् व्यवहार, अधिकार, कर्तव्य, सामान, स्थान तो आपस में क्लेश का कारण बहुत ही कम अर्थात न के बराबर हो जाएगा। अतः हमे तय कर देना चाहिए क्या व्यक्तिगत है एवं क्या common। अर्थात सभी के व्यक्तिगत सामान,

व्यक्तिगत स्थान, व्यक्तिगत अधिकार, व्यक्तिगत कर्तव्य, व्यक्तिगत काम, अर्थात यह बस जिसके हैं उसी ने देखने हैं सब एक दूसरे की दोस्त के नाते बस मदद कर सकते हैं इससे ज्यादा कुछ नहीं तथा common स्थान, अधिकार, कर्तव्य, काम आदि यह बस घर के मैनेजर ने देखने होते हैं मालिक की मन पसन्द के सब सदस्यों की मदद से बस काफी आसान हो जाएगा।

ऐसे भाव से घर को मैनेज करने की कोशिश करें सही से परिभाषित करें पूरी उम्मीद है आपका घर काफी अच्छी तरह से व्यवस्थित हो जाएगा या हम कह सकते हैं आप जितना अच्छा परिभाषित कर पाऐंगे उतना ज्यादा अच्छा व्यवस्थित हो जाएगा।

जय श्री राम।

★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★

सभी राज्य (संगठन, परिवार, व्यवसाय, व्यापार, ऑफिसेस आदि) व्यवस्थाओं से चलते है, कुछ व्यवस्थाऐं बनायी जाती हैं बनानी पडती है इसी से यह सब राज्य चलते हैं। व्यवस्थाऐं अगर अच्छी होती हैं तो ये अच्छे चलते हैं व्यवस्थाऐं अच्छी नहीं होती हैं तो ये अच्छे नहीं चलते हैं एवं अगर व्यवस्थाऐं बुरी होती हैं तो ये बुरे चलते हैं यह सब निर्भर होता है व्यवस्था बनाने वालों पर। आजकल क्या हो रहा है कि व्यवस्था बनाने वाले व्यवस्था बनाते समय सिर्फ अपने स्वार्थ का ही ध्यान रख रहे हैं। उन सब लोगों के हित का जिन लोंगों का सम्बन्ध इन व्यवस्थाओं से जुड़ा है जिन लोगों ने ये

व्यवस्थाऐं चलानी हैं उनका हित, स्वार्थ आड़े आता है तो परिणाम होता है व्यवस्थाओं का फेल हो जाना। अगर व्यवस्था बनाते समय अपने स्वार्थ के साथ-साथ व्यवस्था निभाने वालों के हित का भी अगर ध्यान रखा जाऐ तो व्यवस्थाऐं अच्छी हो जाऐंगी एवं दूरगामी हो जाऐंगी व अच्छे परिणाम होंगे। बस व्यवस्थाऐं बनाते समय व्यवस्था निभाने वाले लोगों के हित का सर्वप्रथम ध्यान रखना ही रामपन है। आप करके देखें बस आपके यहां धीमे-धीमे रामराज्य हो जाएगा। अर्थात कोई भी राज्य तभी सही से चलता है जब उसकी व्यवस्थाऐं अच्छी होती है जैसी राज्य की व्यवस्थाऐं वैसा राज्य। जहां व्यवस्थाऐं बनाते समय न केवल राजा का हित बल्कि सर्वप्रथम प्रजा की सुविधा एवं प्रजा के हित का सर्वप्रथम ध्यान रखा जाता है वहीं रामराज्य हो जाता है अर्थात यहां व्यवस्था बनाते समय राजा को इस बात का ध्यान रखना होता है कि व्यवस्थाओं का पालन करने में कही :–

1. प्रजा को कोई नुकसान कोई असुविधा कोई परेशानी तो नहीं हो जाएगी।
2. प्रजा पर कहीं झूठे आरोपों के लगने की संभावना तो नहीं हो जाएगी।

जब आपके राज्य में ऐसे नियम एवं ऐसी व्यवस्था बनेगी तो आपके यहां रामराज्य जैसा ही हो जाएगा। राम जी जैसे स्वामी, अत्यन्त सुन्दर, आप स्वभाव देखें राम जी ऐसे हैं कि अपने सेवक को वे अगर कभी कुछ

देते हैं उसके लिए कभी कुछ करते हैं तो तभी कभी भी ऐसा नहीं सोचते कि उन्होंने सेवक के लिए कुछ किया है। उलटा देते वक्त और करते वक्त उनके मन में तो संकोच ही रहता है कि मैं अपने सेवक के लिए उचित भी कर रहा हूं या नहीं कहीं कम तो नहीं कर रहा हूं। मेरा सेवक देखो कितना अच्छा है कि मैने उसके लिए जो भी किया वह उस ही में खुश हो गया उसने उसमें कोई कमी ही न देखी तथा वह अपने सेवक की इस बात के लिए आभारी रहते हैं तथा आभारी हो जाते हैं। ऐसे स्वामी हैं श्री राम। अब स्वभाविक है जिस सेवक को राम जैसे स्वामी मिल जाऐं, जिस राज्य को राम जैसा राजा मिल जाएगा उस राज्य का, उस सेवक का आनन्द न आ जाऐगा।

★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★

हम अगर दूसरों के लिए कुछ करते हैं चाहें थोड़ा या ज्यादा तो उसकी हमें इतनी तड़ी नहीं मारनी चाहिए कि दूसरे के लिए उसे सहना बर्दाश्त करना भारी हो जाए। हमेशा ध्यान रखें कि हर किसी में खुद्दारी एवं आत्मसम्मान होता है तथा इसके लिए इन्सान कुछ भी कर लेता है बड़ी से बड़ी से चीज का त्याग कर देता है बड़े-से-बड़े अपने का त्याग कर देता है। हर कोई किसी का भी एहसान तब ही लेना चाहता है या ले लेता है जब उसके आत्मसम्मान एवं खुद्दारी को ठेस नही पहुंचती है। दूसरी तरफ यह भी ध्यान रखें कि जो मदद दूसरों की तुमने की थी वह उन्होनें मांगी थी या

तुमने खुद की थी अगर खुद की थी तो बिलकुल ही तुम जरा सी भी तड़ी मारने के अधिकारी नहीं हो। हमेशा ध्यान रखें कि कभी भी आपको दूसरे का आत्मसम्मान गिराना एवं अपने मान बढ़ाने का हक नहीं है यह अन्याय है, अपनी साधन सम्पन्नता का दुरुपयोग है सदुपयोग नहीं।

जय श्री राम

★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★

किशोरी कोई ऐसा इन्तजाम हो जाए।
मैं तो करुं काम तेरा नाम हो जाए।
किशोरी ....

मैं तो बनूं भक्त तु मेरा भगवान हो जाए।
किशोरी ....

मैं तो पढ़ूं तुझको मुझे ज्ञान हो जाए।
किशोरी ....

मैं तो भजूं तुझको मेरा काम हो जाए।
किशोरी ....

★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★

श्री रामचरितमानस में लिखा है कि सारी रामचरितमानस की तो बात ही क्या अगर कोई इसकी 5–6 चौपाईयों को भी समझकर अपनाकर अपने मन में धारण कर लेता है तो उस मानव के अविद्याजनित रोग श्री राम

जी हर लेते हैं। अतः काश हर इन्सान ऐसा कर ले तो उसमें अविद्या न रहे तथा अविद्या न रहेगी तो वह अपना कल्याण भी तथा औरों का कल्याण भी कर ही पाऐगा साथ में श्री राम जी की कृपा और रहेगी।

अतः इस जनता के प्रतिनिधि होने के नाते अब अगर जनता स्वयं नहीं कर पा रही है तो हम करा दें अगर हम कराऐंगे तो भी पूरा भी नहीं तो काफी हद तक या कुछ हद तक तो हो ही पाएगा तथा कर पाना आसान भी है।

हम अपने राज्य में अर्थात परिवार में या ऑफिस में सभी कमरों में स्पीकर लगवा दें। हर दिन एक बार सुबह या लन्च के समय या चाय के समय चलाएं तथा धीमे-धीमे इसका प्रभाव जनता पर जाने दें तथा कुछ अवधि कहो एक साल- दो साल इसके प्रभाव को जानने का इन्तजार करें आप स्वयं अन्तर देख पाऐंगे।

हमें अपनी नीतियां, नियम, सावधानियां, दण्डसंहिता, पुरस्कार नीति, कर्मचारी कल्याण नीति, एवं संगठन वातावरण नीतियों को देखने व समझने तथा उसको श्री राम की नजर से देखने व समझने का मौका दें।

अपने मन में अपने राज्य में रामराज्य बनाने की कामना एवं भावना को गहरा लें क्योंकि इस ही में आपका, अपनों का एवं जनता का एवं समाज का आपके अपनों का हित है एवं सच्चा हित है।

★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★

रामराज्य आह्वाहन मिशन

काश! हम सब भी श्रीराम जैसे अच्छे स्वामी, श्रीराम जैसे अच्छे कर्मचारी, श्रीराम जैसे अच्छे मैनेजर, श्रीराम जैसी अच्छी प्रजा होते तो इस दुनिया का तो सुखी होना, आनन्द से भरपूर होना तय था।

"आओ रामपन सीखे एवं राम जैसे हो जाऐं"

www.ramrajyaahwahan.com

हमारे दोस्त बने एवं धरती पर रामराज्य लाने का चैलेंज स्वीकार करें

बस अगर आप हमारे दोस्त बनना चाहते हैं तो आपको किन्हीं 3 घरों/व्यापारों में 'रामराज्य' बनाने का लक्ष्य साधना होगा तथा उसमें हम भी आपका साथ देंगे। इसके लिए आपने निम्नलिखित बातों का ध्यान रखना है।

– आप बस सिर्फ काम बनाएं, कभी भी कोई काम बिगाड़ें नहीं, न अपना, न किसी और का।
– आप सिर्फ समझाऐं, सिर्फ समझाऐं मगर जबरदस्ती न करें, दूसरे के समझने का इन्तजार करें सब्र रखें।
– आप सिर्फ प्रेमपूर्ण (सौहार्द्रतापूर्ण) वातावरण बनाऐ, कभी क्लेशपूर्ण नहीं, कभी नहीं।
– आप सभी से करुणापूर्ण, दयापूर्ण, सहयोगी भाव रखें।
– दूसरे ने जो किया, जैसे किया क्यों किया उसकी ऐसा करने की मजबूरी समझें, कभी उससे नफरत या गुस्सा ना करें।
– आप अपने काम बनाते समय ध्यान रखें किसी और का काम न बिगड़ जाऐ, काम सभी के बनने ही चाहिऐं, समन्वय बैठाऐं।
– बस ऐसा करें, एवं करते ही रहें, एक दिन सब अच्छा हो जाएगा, अभ्यास करते रहें, करते रहें, अभ्यास से आप इस कला में पारंगत हो जाऐंगे।

अभ्यास से अर्जुन ने ऐसा तीर चलाना सीख लिया था जिसकी कोई कल्पना भी नहीं कर सकता, आप भी यह सब सीख जाऐंगे।

यही तो 'राम' हैं, यही तो रामराज्य है।

जय श्रीराम